बच्चों के खेलने के लिए लकडी के एवं मिट्टी (पकी हुई) के खिलौने, बैलगाडी, लट्टू, गेंद, जानवरों के सिर आदि मिले हैं और पर सुन्दरता के लिए सजावट भी की गयी है।

बाँट एवं तौल:–लोथल में बजन तौलने का system (प्रणाली) मौजूद थी तौलने वाले बाँटों का अनुपात 1: 2: 5: 10: 20 आदि था।

Building Material:–चवूतरे, मकान आदि बनाने के लिए पकी हुई ईंटों का इस्तेमाल किया जाता था कई स्थानों पर कच्ची ईंटों का भी प्रयोग किया गया था। साथ ही दो प्रकार की पक्की ईंटों का प्रयोग हुआ है एक सामान्य प्रकार से मिट्टी की ईंटों तथा दूसरी कंकड सहित पकी हुई ईंटें जो कि जलभराव एवं जल निकासी वाले स्थानों पर पायी गयी है। प्रयोग में सभी ईंटों का आकार 11 x $5\frac{1}{2}$x $2\frac{1}{2}$ इंच तथा अन्य साइज 12x6x3 इंच से लेकर 15x8x$3\frac{1}{2}$ इंच तक का प्रयोग हुआ है।

इनमें से सर्वाधिक 11 x $5\frac{1}{2}$x $2\frac{1}{2}$ तथा छोटी साइज $9\frac{3}{4}$x 5 x $2\frac{1}{2}$ का अधिक प्रयोग हुआ है। नाली, कुएं इत्यादि में Curved Brick तथा T shape Brick का प्रयोग भी हुआ है। कुछ स्थानों पर पत्थर की पटिया का भी प्रयोग किया गया है साथ ही Beam के लिए दरवाजो की लकडी का भी प्रयोग किया गया है।

सामान्यतः रिहायसी मकानों में ईंटें जोड़ने के लिए मिट्टी के मसाले का प्रयोग हुआ है, पानी से प्रभावित निर्माण अर्थात नाली, स्नानागार, फर्श के लिए चूना युक्त मसाले का प्रयोग किया गया है।

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

सील/मुद्रांए प्राप्त हुई जिनमें से कई सील में जानवरों की छाप, कुछ सील में लेखन तथा कुछ सील में दोनों प्रकार की छाप का प्रयोग किया गया है।

लोथल में कई प्रकार के नग/रत्न भी प्राप्त हुए हैं यहां पर रत्न बनाने वाले का रखाने भी प्राप्त हुए हैं, ऐसा प्रतीत होता है जैसे लोथल रत्न इत्यादि का एक बडा व्यापारिक केन्द्र था।

Carnation- Agate- सुलेमानी पत्थर Ongx–गोमेद Opel-ओपल
Crystal- किस्टल Jasper- सूर्यकांत मणि Amazon- Material-
stealtte- साबुन पत्थर Faience- Gold-सोना

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

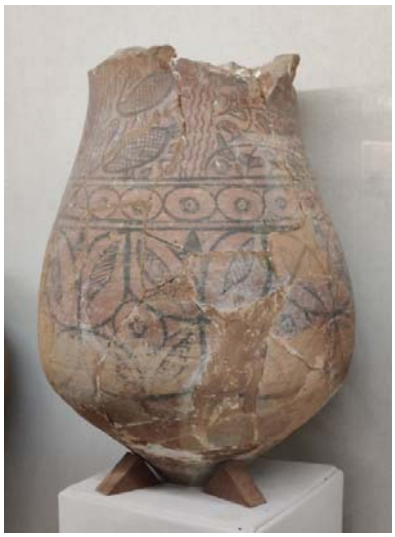

मिट्टी से बनी Beads, चूड़ियाँ, हार, माला, का उपयोग भी किया जाता था। हाथीदांत से बने जेवर का उपयोग सजने संवरने के लिए किया जाता था। यहां हाथीदांत से बनी मालाएं अंगूठी बांलिया, हेयरपिन, चूड़ियां, आदि प्राप्त हुई हैं। कुछ घरेलू उपयोग का सामान जैसे कटोरिया, चाकू के हैडल , सुई, इत्यादि एवं का पर और ब्रॉस से बनी वस्तुएं भी प्राप्त हुई हैं, इनसे बनी वस्तुए मुख्यतः तीर, भाले, चाकू, कुल्हाडी, बेलचा, छेनी, रेजर/उस्तरा इत्यादि ।

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

अन्य स्थलों पर अशोक के स्तम्भ के शीर्ष का अलंकरण भीतरी के स्तम्भ के अलंकरण के समान है। ऐसे में भीतरी स्तम्भ को गुप्तकालीन कहना न्याय उचित नहीं है।

लोथल एक प्राचीन नगर

लोथल हडप्पा सभ्यता का एक महत्वपूर्ण नगर है। लोथल टीले की खुदाई प्रो0 एस0 आर0 राव ने 1955–62 के मध्य करवायी थी। खुदाई के दौरान वास्तु अवषेष जो लगभग 2500–1900 ई0पू0 के थे पाये गये। खुदाई के दौरान यह पाया गया कि नगर की संरचना दो भागों में बटी हुई है, एक दुर्ग भाग एवं दूसरा नगर भाग। पूरे नगर को बाढ़ से बचाने के लिए 13 मी0 मोटी कच्ची ईंटों की दीवार से घेरा गया था। दुर्ग भाग में उस समय के सम्पन्न लोग निवास करते थे। इस भाग के मकान लगभग 3 मी0 ऊँचे चबूतरे पर बने होते थे। यहां पर सभी प्रकार की जैसे–स्नानागार, ढ़की हुई नालियां व कुंआ आदि सुविधाएं थी। नगर क्षेत्र भी दो भागों में बटा हुआ था, एक आवासीय क्षेत्र तथा दूसरा व्यापारिक क्षेत्र, व्यापारिक क्षेत्र में कामगार लोग रहते थे। इस क्षेत्र में एक जलाषय तथा मालगोदाम भी मिला है। जलाषय को पक्की ईंटों से बनाया गया था।

लोथल के उत्खनन से अनेक प्रकार की वस्तुएं प्राप्त हुई हैं जैसे–मनके, मुद्रा, मृदशंड, हाथीदांत एवं ताँबे से बनी वस्तुएं, पषुमान व आकृतियाँ, बांट इत्यादि। लोथल की सम्पन्नता का अनुमान वहां पर पाये गये कीमती पत्थरों/अर्धरत्नो से लगता है। यहां पर कच्चे रत्नों का सही आकार एवं कार्यकुषलता का अनुमान यहां पर प्राप्त फैक्ट्ररी से लगाया जा सकता हैं। यहां पर पत्थरों को गढ़ने के लिए फैक्ट्ररी के अवषेष प्राप्त हुए।

मिट्टी के बर्तन के ऊपर चित्रकारी की गयी है चित्रो में मोर, पेड़, पौधे, पंक्षी इत्यादि का चित्रण किया गया है। प्राप्त बर्तनो में Jar,Vase ,Dish, Bowel, Handle cup, Loop,Lid,Ring stand इत्यादि प्रकार है ।

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

भीतरी का स्तम्भ :

गाज़ीपुर के भीतरी गाँव में ऐतिहासिक स्थल की मौजूदगी को देखने के दृष्टिगगत मैं उत्साहित होकर गाजीपुर से 25 किलोमीटर दूर भीतरी के ऐतिहासिक स्थल पर पहुँचा। यहाँ पर ए0एस0आई0 के तीन संरक्षित स्थल ज्ञात हुए। इन तीनों स्थलों में सबसे महत्वपूर्ण स्थल जिसे स्कंदगुप्त का विजय स्तम्ब कहा गया है। यहाँ पर एक अभिलेख प्राप्त हुआ है जिस पर काशी हिन्दु विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं के दल द्वारा यह घोषित किया गया कि यह स्थल एक विशाल स्थल वैष्णव मंदिर के भग्नावशेष हैं। स्थापकला के दृष्टिगत यहाँ से प्राप्त मूर्तियाँ गुप्तकालीन बताया गया है। पास में ही स्कंदगुप्त का विजय स्तंब है। काशी हिन्दु विश्वविद्यालय के शोत द्वारा कुछ तथ्यों पर किसी कारण से ध्यान नहीं दिया गया है जिनकी ओर ध्यानाकार्षण करने पर कुछ और तथ्य भी प्रकाश में आते हैं। स्तम्भ पर गौर करने पर यह प्रदर्शित होता है कि स्तम्भ की सतह उबड़–खाबड़ है अर्थात सही प्रकार से तराशा हुआ नहीं है जिसके नीचे स्कंदगुप्त कालीन (445–467 ई0) एक अभिलेख अंकित है जिस पर हूड़ सेनाओं को परास्त करने का जिक्र किया है। स्तंब के शीर्ष भाग को यदि ध्यानपूर्वक देखा जए तो यह ज्ञात होता है कि शीर्ष की बनावट मौर्यकालीन है जैसा सम्राट अशोक के विभिन्न स्तंभों में शीर्ष का अंलकरण किया गया है ठीक उसी प्रकार भीतरी के स्तम्भ का शीर्ष भाग अलंकृत है तथा शीर्ष स्तम्भ की गोलाई अत्यधिक चिकना और पॉलिशयुक्त है। संभवता स्कंदगुप्त के विजय के पश्चात् मौर्य स्तम्भ पर अंकित अभिलेखों को छील दिया गया हो तथा हूड़ों पर विजय गाथा अभिलेख युक्त की गई हो। पास में ही एक भव्य इमारत के अवशेष हैं जिसका तल स्तम्भ के तल से 4–5 फिट नीचे अवस्थित निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है तल का अंतर इस बात को इंगित करता है कि यह भवन स्तम्भ के लगाए जाने से पूर्व मौजूद था। भवन संरचना यदि गौर किया जाये तकनीकी रूप से दीवार की मोटाई अत्याधिक है तथा ईटों को आकार (लंबाई, चौड़ाई और मोटाई) प्रकार मौर्यकालीन ईटों से संतुल्य है तथा एक दो स्थलों पर मनौती स्तूप जैसी रचना भी दिखाई देती है। संभवतः यह कोई बिहार या कोई भवन रहा होगा जिसपर बाद में वैष्णव मूर्तियाँ स्थापित कर दी गई हों। तकनीक को दृष्टिगत प्लिंथ स्तर पर सैंड स्टोन (बलुआ पत्थर) की पटिया का इस्तेमाल किया गया है पत्थर उसी गुणवत्ता का है जो कि मौर्यकालीन के स्तंबों में है। साथ ही इस बात का उल्लेख करना भी उचित होगा कि मौर्यकालीन स्तम्भ अधिकतर फलर्कयुक्त पाए गए हैं जबकि मौर्य स्तम्भ गोलाकार होते हुए चिकनी स्तम्भ युक्त होते हैं। भतरी की साईट संख्या 3 पर फलक युक्त एक स्तम्भ प्राप्त हुआ है जिस पर कलाकृतियाँ उकेरी गई हैं जो कि स्पष्टता मौर्यकालीन प्रतीत होता है पास में ही एक भवन के अवशेष दिखाई देते हैं जिससे प्रतीत होता है कि यहाँ पर कोई किला अथवा राजप्राशाद रहा होगा। एक अन्य साईट नदी के किनारे प्रदर्शित होती है जहाँ पर खुले में एक शिवलिंग स्थापित है तथा भूमि के नीचे खुदाई के पश्चात् अन्य जानकारी प्राप्त हो सकती है। भीतरी के स्तम्भ को प्रथमदृष्टया गुप्तकालीन मान लेना बिलकुल भी उचित नहीं है। गाजीपुर के एक अन्य स्थल में भी अशोक स्तम्भ स्थापित है जिसकी संरचना भीतरी के स्तम्भ के शीर्ष के समान ही है तथा

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

लॉर्ड कार्नवालिस का मकबरा लगभग 6 एकड़ भू–भाग में बनाया गया है। मुख्य मकबरा भूतल से 3.6 मीटर ऊँचे एक वृत्ताकार चबूतरे पर 12 विशाल खम्भों पर टिकी गुंबद युक्त संरचना है। इसमें प्रत्येक पिलर का डायमीटर लगभग 2 मीटर है। बाहरी संरचना में ऑर्थोक्वार्नाइट (सैंडस्टोन का कायांतरित रूप) पत्थर का प्रयोग किया गया है। बाहरी भाग में 12 पिलर बनाए गए हैं। पिलर से लगभग 2 मीटर अंदर गोलाकार दीवार खड़ी की गई है। दीवार में भी ऑर्थोक्वार्नाइट पत्थर का इस्तेमाल किया गया है। ईमारत की ऊँचाई लगभग 24 फिट है जिसके ऊपर लगभग 8 फिट डाय का व्यास का गुंबद है। संरचना के मध्य में श्वेत संगमरमर की लॉर्ड कार्नवालिस की मूर्ति एक वर्गाकार चबूतरे पर स्थापित की गई है। चबूतरे के विभिन्न फलकों पर उर्दू एवं अंग्रेजी भाषा में उनकी विजय गाथा का वर्णन किया गया है। चारों कोनों पर विभिन्न धर्मों के सैनिकों को उत्कीर्ण किया गया है जिनमें एक हिन्दू, एक मुस्लिम, एक सिख एवं एक अंग्रेज सैनिक का अलंकरण एवं भाषा शैली से उनकी लोकप्रियता सभी समुदायों में लोकप्रिय प्रतीत होती है। वर्गाकार चबूतरे में फूल, पत्तियाँ, कलियाँ भी उत्कीर्ण की गई हैं जिससे उनके प्राकृतिक सौंदर्य से लगाव का प्रतीक परिलक्षित होता है। पूरे भू–भाग पर फैले बाग के मध्य में मकबरा बनाया गया है तथा मकबरे के चारों ओर बाड़ लगायी गयी है। गोलाकार मकबरे से क्रमशः कुछ दूरी पर गुलाकार पथ बनाया गया है। पथ एवं मकबरे के बीच मे फूल पत्तियों की सजावट भी अत्यंत मनमोहक है। निःसंदेह आज लॉर्ड कार्नवालिस के योगदान को भारत परिपेक्ष में भुला दिया गया हो परन्तु यह मकबरा उनके सुधारों एवं विजय गाथा को याद दिलाता रहेगा। यह मकबरा ब्रिटिश वास्तुकला का अनुपम उद्धारण है।

जमनिया के निकट लटिया :

गाजीपुर जनपद की तहसील जमलिया से 7 किमी0 दूर लटिया नामक स्थान पर एक स्तम्भ स्थित है जिसके ऊपरी स्थान पर उल्टे कमल की आकृति के ऊपर सिंह की मूर्ति स्थापित है। लाट की कुल ऊँचाई लगभग 30–35 फिट है। पिलर पर किसी प्रकार का कोई लेख नहीं है परन्तु पिलर, सेंडस्टोन (ओर्थोक्वोर्टजाइट) का है जो कि मौर्य काल की विशेषता है। अशोक काल के लगभग सभी पिलर इसी प्रकार के पत्थर से बनाए गए हैं। साथ ही ऊपरी भाग में उल्टे कमल की आकृति भी अशोक काल की विशेषता है अतः यह पिलर अशोक काल का ही प्रतीत होता है। वहाँ पर लगी सूचना इस पिलर को भीतरी के पिलर से जोड़ कर दिखाया गया है परन्तु भीतरी का पिलर भी मौर्य काल का ही प्रतीत होता है। उसके ऊपरी भाग पर उल्टा कमल एवं पिलर की चिकनी सतह अशोक काल की प्रतीत होती है। संभवतः स्कंदगुप्त के अभिलेख के आधार पर भीतरी के पिलर को गुप्तकालीन कहा गया जिससे जोड़ते हुए लटिया के पिलर को भी गुप्त कालीन कह दिया गया जो कि सत्य प्रतीत नहीं होता है।

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

लार्ड कार्नवालिस की मजार :

ज्ञात ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर लार्ड कार्नवालिस का जन्म 31 दिसम्बर 1738 की इंग्लैंड के लंदन नामक शहर में हुआ था। लॉर्ड कार्नवालिस सन् 1786 से 1793 तक बंगाल के गर्वनर जनरल रहे और उन्होंने 1793 में बिहार और बंगाल में स्थाई बंदोबस्त लागू करवाया था साथ ही भारतीय सिविल सेवाओं को आरम्भ करने का श्रेय भी इन्हें ही जाता है। अपने प्रवास के दौरान ब्रिटिश साम्राज्य के दृष्टिगत टीपू सुल्तान को पराजित कर श्री रंगपट्टनम की संधि जैसे महत्वपूर्ण कार्य को अंजाम दिया। जुलाई 1805 में लार्ड कार्नवालिस को गर्वनर जनरल बनाकर पुनः भारत में नियुक्त किया गया। इस प्रवास के दौरान 5 अक्टूबर 1805 को गाज़ीपुर प्रवास के दौरान उनकी मृत्यु हो गई।

लार्ड कार्नवालिस की मजार

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

मेरी पुरातात्त्विक तीर्थ यात्रा

ई0 मृगेन्द्र कुमार अनिल
अधिशाषी अभियन्ता
लोक निर्माण विभाग
एवं उपाध्यक्ष ब्रम्हावर्त रिसर्च इन्सटीट्यूट

स्वभाव से यायावर और नौकरी हमें ऐसी मिली जिसमें मिट्टी और पत्थरों से खेलना पड़ता है। जिला आजमगढ़ स्थानान्तरण के पश्चात्, जिला के अन्य स्थानों एवं आस–पास के दूसरे जिलों में भी भ्रमण का अवसर मिला। समान्यतः एक मानसिकता के तहत मध्य या पश्चिम उत्तर प्रदेश का कोई भी व्यक्ति पूर्वांचल के जिलों में रहने की जो हिचकिचाहट होती है, वही भाव मेरे भी मन में था। बहुत से सवाल मन में उमड़ रहे थे। जाने कैसा माहौल होगा? जाने कैसी परिस्थितियाँ होंगी? जाने कैसे लोग होंगे? जाने कैसा अंजाना सा भाव, अंजानी सी मन में व्याकुलता लिए नया कुछ करने और जानने की इच्छा संजोऐ हुए जुलाई 2018 में आजमगढ़ में समर्पित भाव से अपनी सेवाओं का प्रारंभ किया। प्रत्येक स्थान के कुछ अच्छी और कुछ डर के (परिस्थितियों अनुरूप) पलों के अनुसार मन में बहुत से अच्छे भाव एवं नया कुछ जानने की जिज्ञासा प्रबल जोर मार रही थी। इसी प्रवास के दौरान आजमगढ़ एंव आसपास के परिक्षेत्र को जानने और समझने का अवसर प्राप्त हुआ। उस जिज्ञासा को शब्दों में पीरोने का एक प्रयास है। इस प्रवास के दौरान कई प्रकार के साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक तथ्यों को जानने का अवसर प्राप्त हुआ, उन्हीं का विश्लेषण/वर्णन किया गया है।

गाजीपुर के ऐतिहासिक स्थलों की यात्रा :

आजमगढ़ के दौरान ही पेशे सम्बन्धी कार्यों के लिए गाजीपुर, कलेक्ट्रेट, जल निगम, लोक निर्माण विभाग आदि से सामंजस्य बनाये रखने के लिए कई बार गाजीपुर की यात्रा करनी पड़ी। इसी दौरान संज्ञान में आया कि गाजीपुर में 1805 ईस्वी में प्रथम गर्वनर जनरल लॉर्ड कार्नवालिस की कब्र स्थित है। इसी के साथ भीतरीी ग्राम में स्कंदगुप्त का अभिलेख, जमनियाँ में अशोक की लाट एवं सईदपुर के पास अत्यंत पुराना टीला स्थित है। विभिन्न अवकाशों एवं समय की उपलब्धता के अनुरूप उक्त ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक स्थलों पर भ्रमण का अवसर प्राप्त हुआ। गाजीपुर की स्थापना तुगलक वंश के सैय्यद मसूद गाज़ी द्वारा की गई थी। ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर राजा मान्धाता ने दिल्ली की सल्तनत से अधीनता अस्वीकार कर स्वयं को स्वतंत्र राजा घोषित कर दिया था जिस पर मुहम्मद विन तुगलक ने अपने सिपहसलार सैय्यद मसूद को राजा मान्धाता के गढ़ पर हमला करने भेजा था। सैय्यद मसूद को जीवनोपरान्त गाज़ी की उपाधि प्रदान की गई साथ ही इस नगर को गाज़ीपुर के नाम से जाना गया।